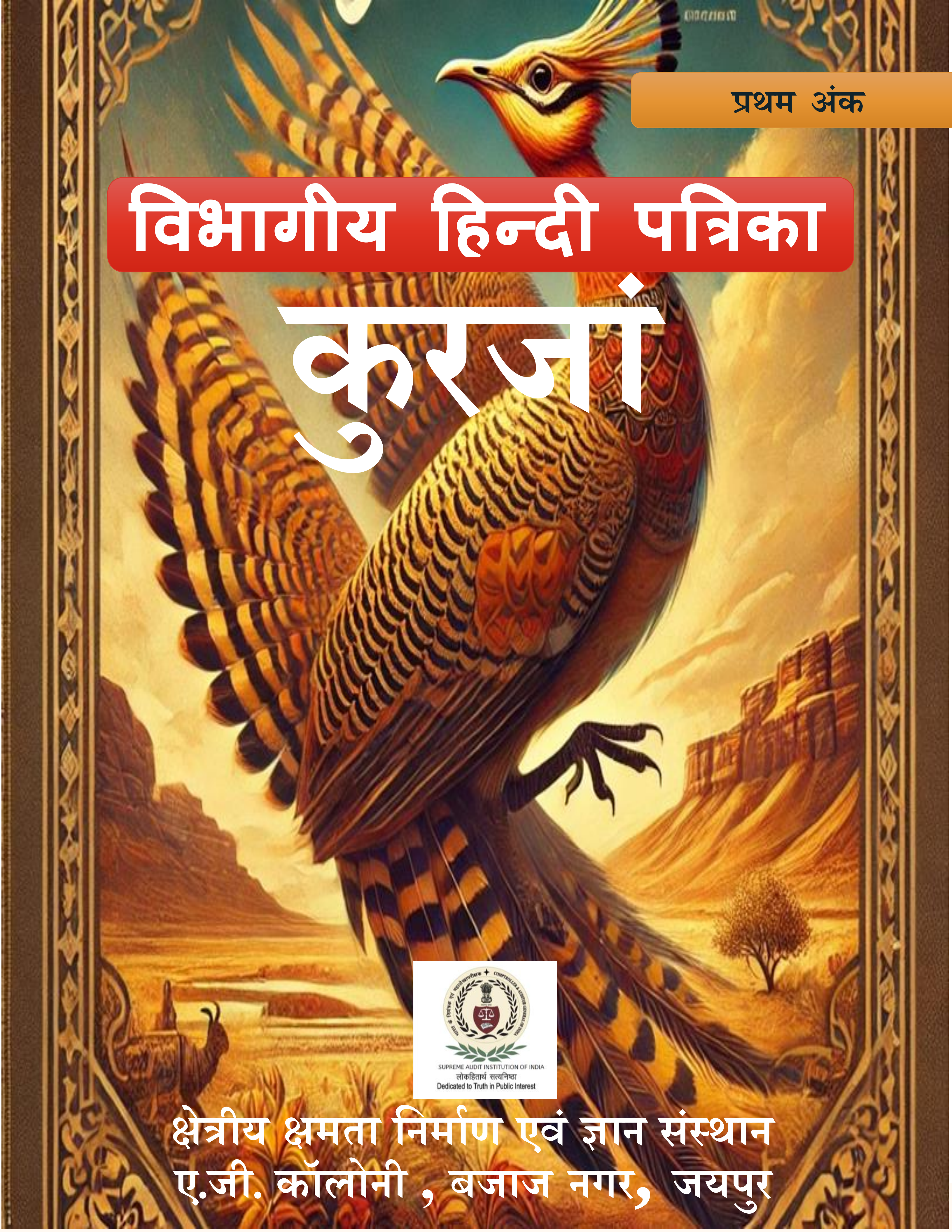

प्रथम अंक

# विभागीय हिन्दी पत्रिका

# कुरजां

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

## क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
## ए.जी. कॉलोनी , बजाज नगर, जयपुर

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर
REGIONAL TRAINING INSTITUTE , JAIPUR

# अनुक्रमणिका


| | |
|---|---|
| हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश | 4 |
| प्रधान निदेशक महोदय का संदेश | 6 |
| स्वतंत्रता दिवस की झलकियां | 8 |
| आरसीबी&केआई जयपुर में की गई विभिन्न गतिविधियाँ | 9 |
| गुन्नू (लेख) | 11 |
| ओआईओएस मॉडयूल: एक परिचय (लेख) | 13 |
| दिल थोड़ा उदास है (कविता) | 15 |
| सरकारी लेखा परीक्षक की कहानी (कविता) | 16 |
| साहसी नारी (कविता) | 17 |
| हँसी: जीवन की ताकत (कविता) | 18 |
| शिलोंग यात्रा वृतांत (लेख) | 19 |
| ग़ज़ल | 21 |
| सच्चा सुख संसाधनों में नहीं 'आत्मिक' साधना से मिलता है (लेख) | 22 |
| लेखापरीक्षा के दोरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग कुछ जानकारी (लेख) | 26 |
| गाँव वाला घर (कविता) | 30 |
| हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का परिणाम | 31 |

# हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

सत्यमेव जयते

**गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री**
**भारत सरकार**

## संदेश

प्रिय देशवासियो।

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है। भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों सिद्धों नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खडी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति ज्योतिरीश्वर ठाकुर तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है. जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली कुमाउनी गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार

विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है. तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं. जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहरी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह आत्मनिर्भर भारत' व विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

# प्रधान निदेशक महोदय का संदेश

**श्री रामावतार शर्मा**

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, जयपुर की प्रथम हिन्दी ई-पत्रिका " **कुरजां**" के प्रकाशन पर मैं अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। इस पत्रिका के प्रथम प्रकाशन को वास्तविक रूप देने में कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की महती भूमिका रही है। इसके लिए मैं उन सभी का अभिनंदन करता हूँ।

**कुरजां**, राजस्थान के एक प्रवासी पक्षी का नाम है जो एतिहासिक रूप से राजस्थानी लोक कथाओं में एक सन्देशवाहक पक्षी माना जाता है। मैं आशा करता हूँ कि कुरजां नाम की यह ई-पत्रिका भी क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान की गतिविधियों एवं इस पत्रिका में अपनी रचनाओं के माध्यम से योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों की भावनाओं एवं विचारों को एक सन्देश की तरह ही अपने पाठको तक पहुंचाएगी।

# कुरजां परिवार

**मुख्य संरक्षक**

श्री रामावतार शर्मा

**प्रधान निदेशक**

संपादक मंडल

श्री सुरेंद्र कुमार जैन
वरिष्ठ प्रशासनिक अधकारी

श्री राजेन्द्र प्रसाद मीना
सहायक प्रशासनिक अधकारी

संपादन सहयोग

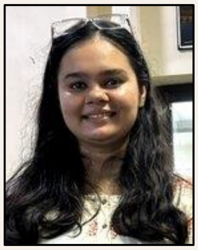

सुश्री अदिति शर्मा
यंग प्रोफेशनल

श्री दीपक भारद्वाज
यंग प्रोफेशनल

**रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है | रचनाओ की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे|**

**संपादक मंडल**

# स्वतंत्रता दिवस की झलकियां

# क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान जयपुर में की गई विभिन्न गतिविधियाँ

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान कार्यालय में प्रशिक्षण के दौरान कई गतिविधियाँ हुईं, जैसे कार्यशालाएं, समूह चर्चाएं, और प्रायोगिक सत्र। इनका मकसद था कि प्रतिभागियों को प्रशासनिक प्रक्रियाओं, सूचना का अधिकार कानून, और अन्य विषयों पर अच्छे से समझ और व्यावहारिक अनुभव मिले, ताकि उनकी जानकारी और कौशल बेहतर हो सकें।

कैंपस में  पर्यावरण को  स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से  पेड़-पौधे लगाए गए,  जिससे प्राकृतिक सुंदरता बढे और प्रदूषण में कमी आए।

# गुन्नू

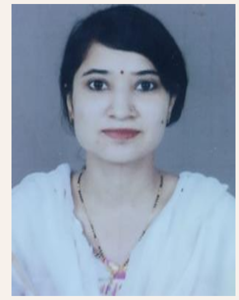

**श्रीमती लवली शर्मा**

अतिथि लेखक

दादू और तेज ..दादू बाल सुलभ आवाज पर झूला और तेज कर देता। यह प्रतिदिन का कार्यक्रम बनता जा रहा था। घर से दादू हाथ पकड़ कर उस मासूम सी पोती जिसका नाम गुन्नू था, अक्सर पार्क ले जाता था। बच्चों को देखकर चहक उठती थी वह। सड़क पर इधर – उधर भागना उसका शगल था। दादू भाग -भागकर उसे कारों और स्कूटरों से बचाता पार्क के नजदीक ले ही आता था। पार्क को देखते ही गुन्नू सहसा चहक उठती थी। मानो उसे स्वर्ग मिल गया हो। संसार की संपदा उसके झोली में आ गिरी हों। ठीक छह बजे वह दादू को याद दिल देती थी। चलो न दादू। सारे काम छोड़कर रोज की भांति दादू बस बाल सुलभ बातों में आ जाता था। लौटते वक्त चिप्स की जरूर जिद करती थी। यह नहीं, यह वाला लूँगी -नीला – वाला। पता नहीं जाने क्यों नीला रंग ही क्यों पसंद था। यही वह रंग था जो उसने सबसे पहले जाना था, जब उसका पिता नीले रंग की फ्रॉक उसके लिए लाया था।

तभी से उसे नीले रंग से सच्चा प्यार हो गया था। नीला हेयर बैंड, नीले खिलौने की बाढ़ सी लगा दी उसके कमरें में उसके पिता ने। दादू ने भी उसके जन्म दिवस पर एक नीली गाड़ी दी थी जिस पर बैठकर वह घर में दिन भर घूमती रहती थी। उसे अन्य रंगों में उतनी दिलचस्पी नहीं थी जितनी की नीले रंग में। तीन साल की गुन्नू अब धीरे -धीरे बढ़ी हो रही थी। दू भी अब कृशकाय होते जा रहे थे, देह में उतनी ताकत भी नहीं बची थी। परंतु फिर भी गुन्नू की जिद पर धीरे – धीरे चलकर पार्क लें जाना उनकी आदत होती जा रही थी।

बेंच पर एकांत में बैठकर सोचते रहते थे कि एक दिन गुन्नू भी बड़ी होगी और अपने ससुराल भी जायेगी। सहसा उनकी आँखों में अश्रु धारा फूट पड़ी थी। उससे गहरा लगाव जो था। रिटायरमेंट के बाद एक ही सहारा था मन लगाने का। आज गुन्नू उदास सी थी, क्योंकि दादू को बुखार जो आ गया था, इसलिए दादू उसे पार्क घुमाने नहीं ले जा सके थे। गुन्नू की हर जिद पूरा करना दादू का काम बन गया था पर आज तो दादू चिप्स भी नहीं दिला सकते थे, क्योंकि बीमार जो थे। नन्हे – नन्हे हाथों से माथे पर विक्स मलती जा रही थी। और रो भी रही थी दादू आज उसे पार्क नहीं ले गए थे। बस उसे इंतजार था कि दादू कब ठीक हों और उसे पार्क ले जाएं। वह दिन भी आया जब दादू की तबीयत थोड़ी सुधरी। वह फिर जिद करने लगी कि दादू पार्क चलों, धीरे – धीरे ही सही दादू उसे सड़क पर करके पार्क ले ही आए। सुस्ताने के लिए बड़े भारी मन से एकांत में एक बेंच पर बैठ गये। फिर अवचेतन मन ने अपनी रफ्तार पकड़ी सोचने लगें, कल गुन्नू सुसराल चली जायेगी तो मन कैसे लगेगा। अचानक उनकी तंद्रा टूटी। दादू उसे सड़क पर करके पार्क ले ही आए। सुस्ताने के लिए बड़े भारी मन से एकांत में एक बेंच पर बैठ गये। फिर अवचेतन मन ने अपनी रफ्तार पकड़ी सोचने लगें, कल गुन्नू सुसराल चली जायेगी तो मन कैसे लगेगा।

अचानक उनकी तंद्रा टूटी।

सामने गुन्नू खड़ी थी, फिर जिद पकड़ने लगी कि दादू ठंडी वाली बर्फ दिल दो .. न दादू ने खूब समझाया कि बर्फ खाने से गला खराब हो जायेगा पर गुन्नू कहाँ मानने वाली थी  आखिरकार गुन्नू की जिद के कारण दादू को झुकना ही पड़ा ।

घर आकर फिर दादू आपने काम में लग गये गुन्नू अपने खिलौने में मस्त हो गई । बहु ने एक कप चाय बनाई फिर दादू सुस्ताने लगे । पता नहीं नींद कब आ गई । दादू ने सपने मे एक विशालकाय हाथी देखा उस पर गुन्नू सवार थी । सुबह उठते ही स्वप्न विचार की पुस्तक निकली और इसका अर्थ जानने लगे तो पता चला कि गुन्नू भी एक दिन बड़े घर की बहु बनेगी और खूब सारा धन आएगा उसके पास । विचार करने लगे दादू को इससे क्या मिलेगा ? वह तो ससुराल चली जायेगी फिर दादू को भूल जायेगी ।

अब गुन्नू अठारह वर्ष की एक युवा स्त्री के रूप में बदल गई थी उसकी आवश्यकताएँ बदल गई थी । चिप्स, बर्फ न जाने कहाँ पीछे छूट गये थे । पर नीली वस्तुओं से उसका प्रेम यथावत रहा । दादू की उम्र भी अस्सी पार कर चुकी थी । आँखों से दिखाई भी कम पड़ने लगा था । गुन्नू आज भी दादू की सेवा में लगी ही रहती थी । समय पर दवाई देना, चाय देना कभी भूलती न थी । दादू से इतना स्नेह करती थी कि आज भी बिस्तर पर पर उनके संग सोना वह आज भी नहीं भूली थी। पता नहीं आज गुन्नू ने जिद पकड़ ली कि आज दादू उसे फिर घुमाने ले जायेंगे और बर्फ खिलाएंगे । जैसे तैसे दादू का हाथ पकड़कर गुन्नू दादू को पार्क ले ही आई झूला झूलने नहीं बल्कि सैर कराने ले आई । अचानक दादू के सीने में दर्द उठा । फिर दादू छाती पकड़कर वही बैठ गये फिर झूले की तरफ देखा तो गुन्नू छोटी बच्ची की तरह नजर आई और दादू उसे झोटा दे रहे थे धीरे- धीरे झूले के पास गये । फिर न जाने कब प्राण पखेरू उड़ गये पता नहीं चला गुन्नू धक्क सी रह गयी  और जोर से चिल्ला पड़ी दादू चिप्स ...... दादू बरफ .......।

# ओआईओएस मोडयूल: एक परिचय

श्री दीपक सैनी
स.प्र.अ.
(आरसीबी एंड केआई)

जैसे-जैसे समय अपनी 'डिजीटल रफ्तार' से बढ़ रहा है वैसे-वैसे सूचना तकनीक आधारित प्रणालियाँ और व्यवस्थाएं जीवन के निजी और सार्वजनिक दोनों पहलुओं पर अपनी गहरी पकड़ बना रही हैं। इसके अलावा 'एक देश एक विधान' वाले विचार के अनुसार संपूर्ण भारत में काम आने वाली विभिन्न प्रणालियों को भी एक रूप बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसी प्रयास के तहत भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कार्यालय एवं उसके तहत आने वाले भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में लेखापरीक्षा कार्य में समरूपता लाने हेतु 'ओआईओएस' नाम की कार्य प्रणाली का गठन किया गया है। वर्ष 2020 के मध्य से इस प्रणाली पर जोर-शोर से कार्य किया जा रहा है।

जिस प्रकार बड़ी एवं सार्वजनिक कंपनियों में संपूर्ण कार्य को अलग-अलग मापांक यानी मॉड्यूल बनाकर किया जाता है तथा कार्यान्वयन के समय उनमें आपसी संबंध स्थापित किया जाता है, ठीक उसी प्रकार ओआईओएस की भी बनावट की गई है। ओआईओएस में मुख्य रूप से काम आने वाले मॉडयूल्स निम्नलिखित हैं-

**1. संगठन मॉड्यूल (Organization Module):** एक कार्यालय के स्तर पर किए जाने वाले सामान्य कार्य जैसे कार्यालय की रचना करना, उसका पद अनुक्रम, रोल की रचना करना, कार्यालय कार्मिकों के लिए पद बनाना, ऑफिस का डाटा चढ़ाना, छुट्टियां चढ़ाना आदि कार्य इस मॉड्यूल के तहत किए जाते हैं।

**2. कार्मिक माड्यूल (Personnel Module):** इस मॉड्यूल के अंतर्गत विभाग में काम करने वाले प्रत्येक कर्मचारी और अधिकारी का अभिलेख यानी रिकॉर्ड तैयार करना, खुद की प्रोफाइल देखना, किसी उपयोगकर्ता का काम दूसरे को सपना, छुट्टियां देखना, ग्रेडेशन लिस्ट देखना, फील्ड विजिट में किए गए काम का योगदान देखना, भेजे गए कार्यों यानी सेंट आइटम्स की सूची देखना, अन्य घटनाओं यानी माय इवेंट्स की सूची देखना जैसे कार्य किए जाते हैं।

**3. ऑडिटी यूनिवर्स मॉड्यूल (Auditee Universe Module):** यह मॉड्यूल नई एंटिटी बनाना, उपलब्ध अभिलेखों में से खोजना, उसका ऑफिस विंग आदि से संबंध स्थापित करना, सामूहिक अभिलेख चढ़ाना आदि से संबंधित है।

**4. लेखापरीक्षा योजना माड्यूल (Audit Planning Module):** लेखापरीक्षा योजना एवं वार्षिक लेखा परीक्षा योजना बनाना, लेखा परीक्षा कार्य भार, लेखा परीक्षा अवलोकन को ढूंढना आदि कार्य इसके तहत किए जाते हैं।

**5. लेखापरीक्षा कार्यान्वयन मॉड्यूल (Audit Execution Module):** यह पूरी ओआईओएस प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इसके अंतर्गत लेखापरीक्षा के लिए टीम बनाना, लेखा परीक्षा कार्यक्रम बनाना, लेखा परीक्षा का कार्य यानी फील्ड विजिट करना, लेखा परीक्षा कार्यान्वयन डैशबोर्ड पर कार्य करना, लेखा परीक्षा विचलन, आदि कार्य किए जाते हैं।

**6. लेखापरीक्षा उत्पाद मॉड्यूल (Audit Product Module):** इस मॉड्यूल के अंतर्गत स्थानीय स्तर पर जारी किए जाने वाले तथा भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक मुख्यालय को भेजे जाने वाले लेखा परीक्षा उत्पाद बनाने, जारी करने, खोजने आदि से संबंधित कार्य मुख्य रूप से किए जाते हैं।

**7. लेखापरीक्षा फॉलो-अप माड्यूल (Follow-up Module):** पूर्व में बनाई गई लेखा परीक्षा के अवलोकन, लेखापरीक्षा उत्पाद की प्रगति की जांच यहां की जाती है। इसके अलावा ईएन/ एटीएन को ट्रैक करना, मीटिंग अभिलेख बनाने से संबंधित कार्य भी किए जाते हैं।

**8. संचार कम्युनिकेशन माड्यूल (Communication Module):** लेखा परीक्षा से संबंधित किसी भी तरह का पत्राचार जैसे पत्र भेजना, पत्र प्राप्त करना, सभी आने जाने वाले पत्रों को एक जगह डैशबोर्ड के रूप में देखने जैसे कार्य इसके माध्यम से किए जाते हैं।

**9. डाटा कलेक्शन टूलकिट माड्यूल (Data Collection Toolkit):** लेखापरीक्षा आदि के दौरान किए जाने वाले सर्वे आदि से संबंधित कार्य अब ओआईएस के माध्यम से ही करने की सुविधा भी प्रदान की गई है।

इसके अतिरिक्त कुछ और मॉड्यूल्स भी विकसित किये जा रहे हैं जो लेखापरीक्षा से संबंधित विभिन्न कार्यों को सुगमता से संपन्न करने में मदद करेंगे। इस प्रकार हम देखते हैं कि ओआईओएस भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और उससे संबंधित कार्यालयों में विभिन्न प्रकार के लेखा परीक्षा कार्यों को संपन्न करने में बहुत सहायता प्रदान करेगा।

# दिल थोड़ा उदास है

श्री अर्पित मिठारवाल
अतिथि लेखक

जिंदगी में जो चाहिए था, वो सबकुछ मेरे पास है
वैसे तो मैं खुश हूं , पर दिल थोड़ा उदास है

सब कुछ पास होकर भी , कुछ कमी रह जाती है
होठों पर मुस्कान और, आंखों में नमी रह जाती है

पास समुद्र होकर भी , एक अनबुझी सी प्यास है
वैसे तो मैं खुश हूं , पर दिल थोड़ा उदास है

यूं तो कहने को यहां , ढेर सारे अपने हैं
फिर भी इन आंखों में , कुछ अधूरे से सपने हैं

दोस्त तो बहुत है पर , कोई ना दिल के पास है
वैसे तो मैं खुश हूं , पर दिल थोड़ा उदास है

ऐसे लोग बहुत हैं जो , बोली हुई बात को समझे
पर ऐसा कोई नहीं जो , अनकहे जज़्बात को समझे

ऐसा कोई मिल जाए ,बस यही दिल में आस है
वैसे तो मैं खुश हूं , पर दिल थोड़ा उदास है ।

# सरकारी लेखा परीक्षक की कहानी

श्री भावेश
विजयवर्गीय
लेखापरीक्षक

कागजों की जंगल, लेखों की नदियाँ।

सत्य का पता, धरोहर की राह, उनका आँगन बना विश्व का संसार।

खोजते हैं वे निश्चय का खजाना, अनुसरण करते हैं सच्चाई की पहचान।

कागजों की भाषा में छिपा जाता रहस्य, वे निकालते हैं उनका पर्दाफाश।

अनियंत्रित खर्चों की नज़र रहती है, भ्रष्टाचार की जड़ों को खोजते हैं वे भरपूर।

विपत्तियों की ओर जाते हैं वे पहुँच, संविदानिक न्याय का रखते हैं यातायात।

लेखों की भाषा में उनकी बात, सरकारी लेखा परीक्षक की जीवनी है यह साथ।

न्याय के पुरोहित, जनता के वकील, सत्य की राह पर चलते हैं वे नीलाम।

देश के विकास की राह में राही, सरकारी लेखा परीक्षक, यही है उनकी कहानी।

# साहसी नारी

श्री दीपक भारद्वाज
यंग प्रोफेशनल
(आरसीबी एंड केआई)

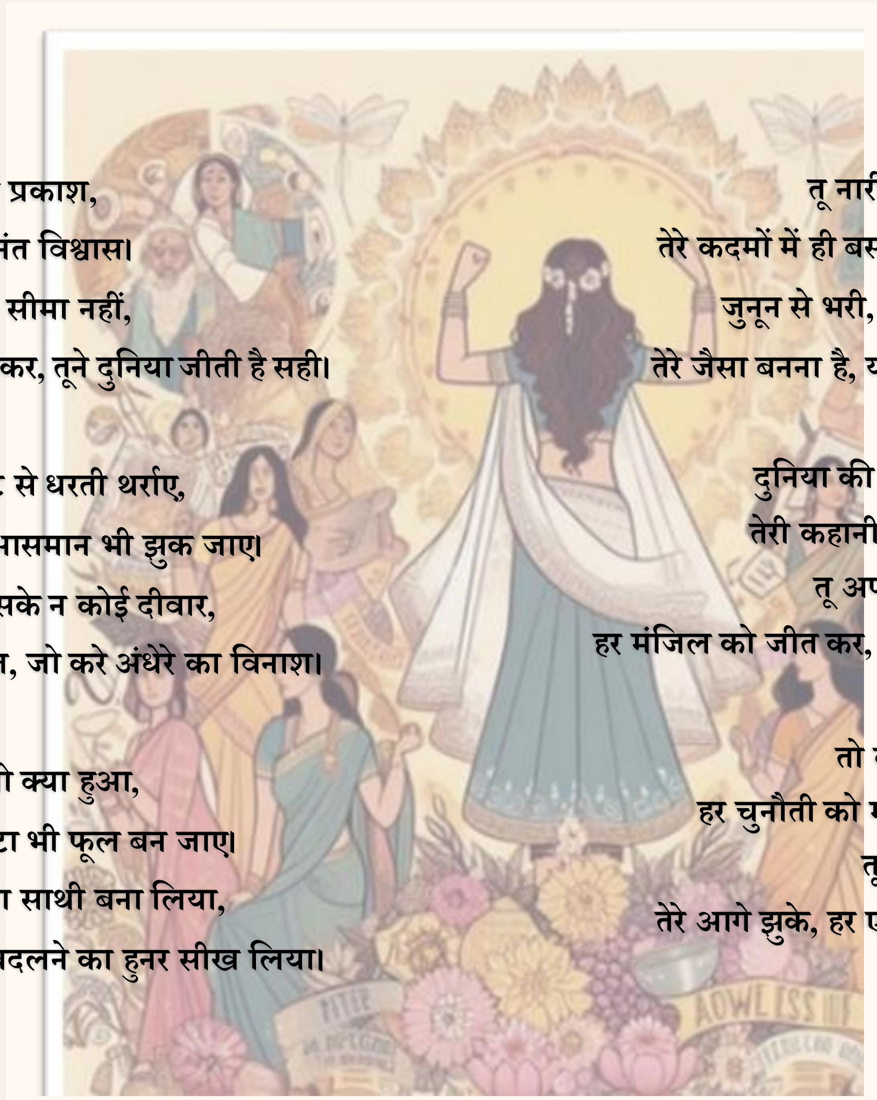

नारी तू है शक्ति, तू है प्रकाश,
तेरे भीतर बसा है अनंत विश्वास।
तेरे हौसलों की कोई सीमा नहीं,
हर मुश्किल को पार कर, तूने दुनिया जीती है सही।

तेरे कदमों की आहट से धरती थर्राए,
तेरे सपनों के आगे आसमान भी झुक जाए।
तेरे हौसले को रोक सके न कोई दीवार,
तू है एक ऐसी मशाल, जो करे अंधेरे का विनाश।

रास्ते में कांटे आएं तो क्या हुआ,
तेरी शक्ति से हर कांटा भी फूल बन जाए।
तूने संघर्षों को अपना साथी बना लिया,
हर हार को जीत में बदलने का हुनर सीख लिया।

तू नारी, तू अडिग, तू निर्भीक,
तेरे कदमों में ही बसती है जीत की सदीक।
जुनून से भरी, तू सबको प्रेरित करती,
तेरे जैसा बनना है, यह सोच सबको डराती।

दुनिया की नजरों में, तू मिसाल है,
तेरी कहानी हर दिल को उबाल है।
तू अपने रास्ते खुद बनाती है,
हर मंजिल को जीत कर, अपना नाम कमाती है।

तो बढ़ती रह, कभी न रुक,
हर चुनौती को मात दे, साहस के साथ।
तू है नारी, तू है अद्वितीय,
तेरे आगे झुके, हर एक विपरीत परिस्थिति।

# हँसी: जीवन की ताकत

सुश्री अदिति शर्मा
यंग प्रोफेशनल
(आरसीबी एंड केआई)

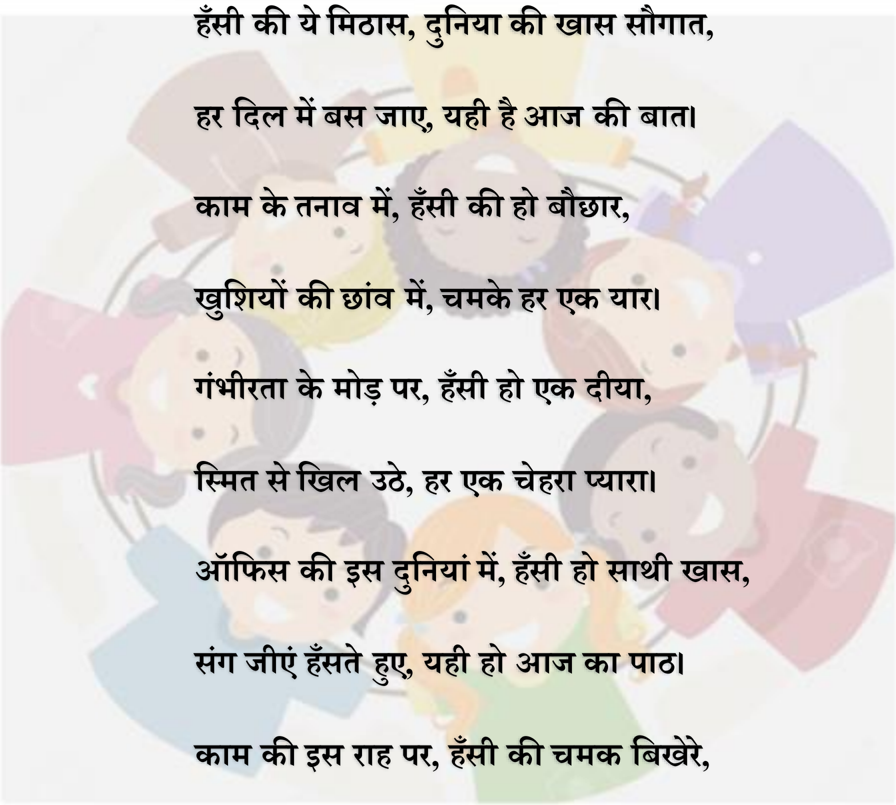

हँसी की ये मिठास, दुनिया की खास सौगात,

हर दिल में बस जाए, यही है आज की बात।

काम के तनाव में, हँसी की हो बौछार,

खुशियों की छांव में, चमके हर एक यार।

गंभीरता के मोड़ पर, हँसी हो एक दीया,

स्मित से खिल उठे, हर एक चेहरा प्यारा।

ऑफिस की इस दुनियां में, हँसी हो साथी खास,

संग जीएं हँसते हुए, यही हो आज का पाठ।

काम की इस राह पर, हँसी की चमक बिखेरे,

सपनों की ऊँचाइयों तक, खुशी का संदेश दे।

आओ मिलकर हँसे, विश्व हँसी दिवस पर,

संग हँसी के इस जश्न को, हर दिल में बसाएँ।

# शिलोंग यात्रा वृतांत

श्री दीपक सैनी
स.प्र.अ.
(आरसीबी एंड केआई)

पिछले दिनों 'क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान शिलोंग' द्वारा आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के सिलसिले में शिलोंग जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस यात्रा का वृतांत खुद के एवं अन्य साथियों की यात्रा अनुभव के आधार पर आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शिलोंग भारत के एक उत्तर पूर्वी राज्य मेघालय की राजधानी है। जैसा कि इसके नाम से ही प्रतीत होता है 'मेघालय' यानी मेघों का निवास स्थान। विश्व में सर्वाधिक बारिश वाले स्थान मासिनराम तथा चेरापूंजी यहीं पर स्थित हैं। मेघालय में एक हवाई अड्डा है जो की शिलोंग में स्थित है। यहाँ की भौगोलिक स्थिति तथा अन्य कारणों से यहां से नियमित रूप से हवाई सेवाओं का संचालन न होकर यदा कदा तथा सप्ताह के कुछ विशेष दिनों में ही होता है। यहाँ से देश के कुछ ही हवाई अड्डों से उड़ान सेवाओं का संचालन होता है।

गुवाहाटी हवाई अड्डे से शिलोंग जाते समय ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे स्थित प्रसिद्ध कामाख्या मंदिर के दर्शन के लिए जाया जा सकता है जो की गुवाहाटी हवाई अड्डे से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह इस क्षेत्र का एक मुख्य मंदिर है। दर्शन में लगभग 4 से 7 घंटे तक का समय लगता है। इसके अतिरिक्त गुवाहाटी हवाई अड्डे से मानस टाइगर रिजर्व भी जाया जा सकता है जो कि यहां से कार से लगभग चार घंटे की दूरी पर स्थित है।

गुवाहाटी से शिलोंग जाने के लिए कोई सार्वजनिक परिवहन बस सेवा उपलब्ध न होने के कारण अधिकांश लोग उत्तर पूर्वी राज्यों द्वारा निर्धारित टैक्सी दरों के अनुसार टैक्सी से यात्रा करते हैं। गुवाहाटी से शिलोंग का रास्ता घुमावदार तथा पहाड़ों के बीच से होकर गुजरता है जो की एक मनोहारी दृश्य होता है। यात्रा के पहले पड़ाव के अंत में हम आरसीबीकेआई शिलोंग पहुंचते हैं जो की लैच्तेलेट (लातुमखरा) नामक जगह पर ऊंचाई पर स्थित भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग का क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र है। शिलोंग के आसपास भी कई दर्शनीय तथा रमणीय पर्यटन स्थल हैं जिन्हें अल्प समयावधि में भी घूमा जा सकता है, इनमें एक प्रमुख पर्यटन स्थल 'एलिफेंटा दर्रा' है। यह स्थल अपने झरनों के लिए प्रसिद्ध है जो की बारिश के मौसम में बहुत अच्छा लगता है। वहाँ के लेखापरीक्षा कार्यालय के बहुत नजदीक एक 'वार्डस लेक' है जो की बहुत अच्छी झील है। यहाँ नवंबर माह में 'चेरी ब्लॉसम' नामक फूलों के एक बहुत ही प्रसिद्ध त्यौहार का आयोजन होता है।

मुख्य शिलोंग से 25 किलोमीटर की दूरी पर 'लाइट्लूम' नामक जगह है जहाँ बारिश के मौसम में झरनों की सुंदरता देखते ही बनती है। वहाँ जाने तथा आने के दौरान रास्ते से पूरे शहर का नजारा लिया जा सकता है। पूरे जिले का ऐसा ही नज़ारा 'शिलांग पीक व्यू' के द्वारा भी किया जा सकता है जो कि वहाँ के 'सेना क्षेत्र' के अंदर मौजूद है। वहाँ सुबह 9:00 से शाम के 4:30 बजे तक गहन सुरक्षा जाँच के बाद ही जाया जा सकता है। शिलोंग का मुख्य बाजार 'पुलिस बाजार' है जहाँ हर तरह की खरीददारी की जा सकती है तथा शिलोंग से अन्य जगहों पर जाने के लिए टैक्सी आदि भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा वहाँ एक पोलो बाजार भी है जो कि पुलिस बाजार की तरह ही प्रसिद्ध है। शिलोंग से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर चेरापूंजी तथा उसके बाद मासिनराम नाम की जगहें भी हैं जो की अत्यधिक बारिश, मनोहारी दृश्यों और लिविंग रूट ब्रिज आदि के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं।

**Top Row** (Left to right): Amit Choudhary(AAO), Shuvam Shukla(AAO), H. Okendro Singh(AAO), Saurav Kumar(AAO), Bhupesh Kumar(AAO), Kumar Kundan(Ar), Sumit Goyal(AAO), Dharmendar Kumar(Ar), Anand K Shukla(AAO), Ganesh Mani(SAO), Jeysankar M(SAO), Rajesh Sharma(AAO), Devang Jain(AAO)

**Middle Row** (Left to Right): Rothan L. Gangte(CF/IT), Ary Lyngdoh(AAO/OIOS), Deepak Saini(AAO), Anjanav Kupar(AAO), Rajesh Kumar(SAO), Jangkhoneh Haokip(SAO), Vikram Badal(AAO), Radhakanta Dey(SAO), Ajay Batra (SAO), Rajiv Nongmaithem(AAO), Mirikant Singh(AAO), Rojee Singh(AAO), Nishant Jain(Sr. Ar), Ravi Kumar II(AAO), Rajeev Kumar(AAO), Shrikant(AAO), Ajay Kumar(AAO), Aditya Mishra(AAO), Lienlalgin Gangte(AAO/eHRMS)

**First Row** (Left to right): Manoj Vashishta(SAO), B.K Hanagoji(SAO), Ratan Kumar(SAO), Prabir Kumar(SAO), V.Nengthianlal(CF/Gen), John K. Sellate (DG), Sibotosh Bhattacharjee(SAO/Guest Faculty), Gayatri Chettri(SAO), Namita Nath(AAO), Mini Kuriakose(SAO), Lalita Ostwal(AAO), H.P Singh (CF/Admn).

# ग़ज़ल

श्री रामानंद शर्मा
सेवानिवृत्त

यह क्या हो गया बात ही बात में
जैसे धूप खिल गई हो रात में ॥

बेवजह कारणों से वह परेशान हो गया
निपटना ही होगा उसे इनसे हर हालत में ॥

उपलब्ध हो गई सृष्टि की संपदा सभी
मिल गई उसे हर संपदा सौगात में ॥

सफलता की कहानी यूं ही नहीं गढ़ जाती
तुम तो आए हो जैसे भरी बारात में ॥

निछावर सभी कर दिए अरमान उसने
यह क्या कर दिया उसने शरारत में ॥

छोड़ आया रणभूमि को वह भी
हर कदम क्या बढ़ाएगा बगावत में ॥

थक हार के मंजिल पाये बिना भी
फैला दिए हाथ दोनों उसने अदावत में ॥

# सच्चा सुख संसाधनों में नहीं 'आत्मिक' साधना से मिलता है

श्री पदमचन्द गाँधी
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

आज हम भौतिक जगत् में इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति एवं दैहिक सुखों के विस्तार के लिए सुन्दर एवं आकर्षक घर संसार की रचना करने तक सीमित हो गये हैं। सम्यक विचारों एवं भावनाओं पर भूतल आज उपिक्षत हो रहा है। बाह्य ऐष्वर्य और साधनों के सघन अम्बार से भी अन्ततः हमें अषान्ति, असन्तोष तथा आसक्ति ही प्राप्त होती है। जीवन चर्या के बाह्य क्षणिक एवं क्षण भंगुर खुषी देने वाले संसाधन कितने ही प्राप्त करले सच्चा सुख नहीं मिलता क्योंक ऐसे सुख की चाहना ही दुःख का कारण बनती है। दृष्य सम्पदा कितनी ही क्यों न हो समृद्ध तो केवल वही है, जिसकी कोई मांग शेष नहीं रह जाती। भीतर की सम्पदा पा लेने पर कुछ और पा लेना शेष नहीं रह जाता, वही सच्चा सुखी है। आन्तरिक सम्पदा सम्यक, सोच, सम्यक विचार, संवेदनशीलता, भावुकता करुणा, दया, विनम्रता और क्षमा से उत्पन्न होती है, जो स्वार्थरहित शुद्ध निर्मल और पवित्र होती है। अन्ततः के उदगारों से ही व्यक्ति ऊर्जा, प्रेरणा, उत्साह और आषावादिता का प्रकाष पाकर अनन्त सुख को प्राप्त करता है। आत्मिय सुख को प्राप्त करना है तो आन्तरिक शक्ति सम्पदा को जाग्रत कर उसे पहचानना है, इसी से जड़ पदार्थों की अनाषक्ति संभव हो सकती है, जिसका परिणाम ही आत्मसंतोष, सन्तुष्टि एवं परमानन्द होता है।

यह सत्य है, शाष्वत सुख साधनों में नहीं साधना में है। वासना में नहीं उपासना में है, भोगों में नहीं योगों में है। विषय भोगों और भौतिक संसाधनों में यदि शाष्वत सुख की प्राप्ति हो सकती तो भौतिक सुख साधनों से सम्पन्न लोग कभी दुःखी नहीं होते, हताष-निराष नहीं होते और अषान्त भी नहीं होते। साधन विहीन या अतिन्यून साधनायें संत, फकीर, योगी, साधक आदि प्रफुल्लित और आनंदित नहीं होते पर ऐसा नहीं है। जैसे प्रचुर भौतिक सुख-सुविधाओं के होते हुए भी लोग अषान्त और निराष रहते हैं। वहीं भौतिक साधनों के होने या न होने पर संत फकीर, साधक आदि सदा सुखी एवं आनन्दित रहते हैं। इसका मूल कारण है, भौतिक साधनों से इन्द्रिय सुख तो प्राप्त किया जा सकता है, पर शाष्वत सुख और आत्मिक आनन्द नहीं। आत्मिक आनन्द तो आत्मा से ही निस्सृ हो सकता है। बाह्य साधन या जड़ पदार्थ केवल इन्द्रिय लिप्सा की पिर्त या एिन्द्रय सुख तक सीमित है, लेकिन ब्रह्मनन्द, परमानन्द की प्राप्ति के लिए साधक को आत्म योग, जप, तप, अनाषक्त भाव, समता भाव से जुड़ कर आत्मा से एकाकार करके ही प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में साधक के अन्तस मे, आत्मा मे, सच्चा आनन्द स्वतः ही उतर आता है।

साधक की आत्मा में ही ब्रह्म का अमृत आनन्द, परमानन्द झरने और बहने लगता है, जिससे डूब-डूब कर साधक सदा के लिए आनन्दित और प्रफुल्लित होता रहता है। तब उसके आनन्द की कोई सीमा नहीं रहती क्यूंकी सीमा तो भौतिक सुख की होती है। भौतिक सुख, इन्द्रियजन्य सुख, भोगजन्य सुख से व्यक्ति कभी तृप्त नहीं होता लिकन आध्यात्मिक सुख, शाष्वत सुख आत्मिक आनन्द पाकर साधक कभी अतृप्त नहीं रहता।

लौकिक सुख में आनन्द नहीं होता वह अनित्य, क्षणभंगुर, देर सवेर बदलने वाला, विनष्ट होने वाला परिणाम स्वरूप दुःखी ही उत्पन्न करने वाला होता है। शाष्वत, ध्रुव, अनुत्तर विमुक्ति, सुख से उसकी तुलना नहीं हो सकती।

आत्म सुख पाने के लिए शास्त्रकारों ने बहुत से उपाय बताये है, जिनमें हम आन्तरिक खुषी एवं प्रसन्नता को प्राप्त कर सकते हैं, वे इस प्रकार हैः-

1. सुख धन की नहीं ध्यान की तलाष में हैः- आज हम धन की तलाष में दौड़ रहे हैं, भाग रहे हैं, कहीं ठहराव नहीं है, धन बाहर है, बहुत दूर है, भागते रहो कोई अन्त नहीं है। इसके विपरीत शान्ति, सुख, खुषी भीतर में है, ठहराव में है, चित्त की शान्ति में है। सच्चा सुख भागने में नहीं ठहराव से मिलता है, सहज ध्यान से मिलता है कवि ने कहा हैः- कस्तुरी कुण्डली बसेः मृग ढूढं वन माही, ऐसे घटीघटी राम है तू ढूढे जग माही! जयपुर

खुषी सच्चा सुख हमारे भीतर है। आज जिसमें हमें होना चाहिए उसमें हमारा सम्बन्ध टूट गया है, जो हमारी श्वासों का श्वास है, जो हमारे प्राणों का प्राण है। उसकी तरफ हमारा ध्यान नहीं है। जो हमारा आनन्द बन सकता है, जो हमारे जीवन का द्वार खोल सकता है। हम उसके विपरीत भाग रहे हैं। हमारा आनन्द है, अन्तः सुख, आन्तरिक खुषी जिसे हम भौतिकता की चकाचौंध में ढूंढ रहे हैं, जो हमारे दुःख का कारण ही बनता है।

2. सुविधा नहीं सुख तलाषेः- दिगम्बर मुनि प्रमाण सागर जी ने अपनी पुस्तक 'सुखी जीवन की राहे' में स्पष्ट किया कि आज व्यक्ति जोड़ने की होड़ में लगा हुआ है, लिकन बाहर की सम्पत्ति में सुख का निवास नहीं है। सुख का निवास हमारे अन्तस की सवंदनाओं में पर होता है। बाहर जो कुछ भी जोड़ा जाता है, वह सुविधा हो सकती है, सुख नहीं। सुविधा जोड़ी जाती है, जुटायी जाती है, जब कि सुख तो भीतर से अर्जित किया जाता है। सुख आन्तरिक सवंदनाओं की अभिव्यक्ति है और बाहर से जो जोड़ा जाता है, वह महज एक संयोग है। जहाँ संयोग है, वहाँ वियोग निष्चित है और वियोग ही दुःख का कारण है।

जब हमारा दृष्टिकोण स्वयं पर केन्द्रित होता है, जब हम अपने जीवन के प्रति जागरूक होते हैं, वही से सुख की उत्पत्ति प्रारम्भ हो जाती है, लिकन जब हमारी दृष्टि वस्तु मुखी होती है, तो हमारे अन्तरंगों में आकुलता उत्पन्न होती है। सुविधाए जीवन का साध्य नहीं है। दुनिया में असफल वह है, जो इस सबको पाने के बाद भी प्रसन्नता को नहीं पा सके। सुख की वासन ले सके।

3. 'पर' निमित्त का सुख नहीं अनुभूति का सुख प्राप्त करेः- पर निमित्त अर्थात् प्रभुता, सामर्थ्य, शक्ति, सत्ता और सम्पदा से जो सुख की अनुभूति होती है, वह केवल अभिप्राय का सुख होता

है। जो सुख दूसरों पर निर्भर हो, वह अभिप्राय का सुख है, वह स्वाश्रित नहीं है। सामने प्रषंसा करने वाला पीढ पीछे निन्दा भी कर सकता है।

जो सुख मन की प्रसन्नता सन्तुष्टि, निर्मलता और पवित्रता आदि से जो सुख मिलता है, वह अनुभूति का सुख है। इससे हमारे चित्त में एक ठहराव आ जाता है। अनुzजज भूति का सुख हमारी सोच की निर्मलता पर निर्भर करता है। अतः सुख का आधार भी प्रसन्नता है, अनुभूति है।

4. स्व मूल्यांकनः- जीने ने बहुत सारे साधन जुटाने के बाद भी मन खिन्न रहता है। असन्तुष्टि की आग में झुलसता रहता है, क्योंकि व्यक्ति को अपनी पात्रता का ग्राफ सदा ऊँचा दिखायी देता है और पात्रता के अनुसार मिलने वाला मूल्यांकन का ग्राफ नीचे लगता है, इसी कारण मन सदैव असन्तुष्ट बना रहता है, जबकि सन्तुष्टि का राज इस चिन्तन में छुपा है, जो दुःख मुझे मिला है, वह मेरी अयोग्यता से थोड़ा है और जो सुख मिला है, वह मेरी पात्रता से कई गुणा ज्यादा है। एसी सोच ही हमें सुखी एवं सन्तुष्ट बनाती हैं अतः पात्रता का मूल्यांकन जरूरी है।

5. कषाय मुक्ति, सुख प्रदान करती हैः- हमारा जीवन राग-द्वेष से भरा हुआ है। जिनसे कई प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। कषाय उत्पन्न होने के कारण मन उद्विविग्न बन जाता है। अहंकार और मोह के कारण आनन्द की प्राप्ति नहीं होती क्यूंकी मोह, ममत्व, राग इसके आधार हैं, क्रोध, अहंकार सुख को आने नहीं देना। मोह, आनन्द के इस आत्मगुण को ढक़ लेता है। अहंकार बाहर के निमित्त से आता है तथा अषान्ति, असंतोष से आती है, ये आत्मा पर बाहरी आक्रमण है, जबकि आनन्द आत्मा में अन्तनिर्हित है, केवल आत्मा पर ध्यान चला जाय तो आनन्द मिल जाता है।

6. धनात्मक सोचः- आत्मिक सुख का आधार है, धनात्मक सोच। आज व्यक्ति स्वयं की पीड़ा से दुःखी नहीं है, वह पर सुख से दुःखी है। ईर्ष्या नकारात्मक सोच का परिणाम है। दूसरों के यष दूसरों की खुषियों से उसकी प्रसन्नता एवं सम्पन्नता से, उनसे तुलना करके व्यक्ति दुःखी बन रहा है। जीवन का सच्चा आनन्द और सुख धनात्मक सोच में है। ईष्वर ने हमें सैदव खुष रहने के लिए बनाया है और वह खुषी हमारे भीतर में ही है। उसे ढूढ़ने की आवष्यकता है। उसमें रमण की आवष्यकता है।

7. स्व-भाव में रमणः- आज हम भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए असत्य, परपंच, झूठ, कपट, माया, चोरी आदि दुष्प्रवृत्तियों में उलझे रहते हैं। अकरणीय कर्म करते हैं। पर पदार्थों पर ममत्व, निन्दा, सकं लेषां में जीवन यापन करते हैं और कल्पना सच्चे सुख की करते हैं, जो संभव नहीं है। हम परिधि में भ्रमण करते हैं, केन्द्र पर नहीं आते। आत्मा से जुड़ने पर, पर से स्व में आने पर, आत्मज्ञान द्वारा सुख का अमृत अन्तस् में प्रवाहित होते ही हम परम सुख का अनुभव करते हैं। हमेषा सुखी रहते हैं, इसके लिए सम्यकज्ञान, दर्षन, चरित्र, विविध योग शास्त्रियों में श्वान योग, कर्म योग, भक्ति योग, ध्यान योग, मंत्र योग आदि मार्ग के अवलम्बन पाकर शाष्वत सुख को प्राप्त कर सकते है। ऐसी स्थिति में साधक भौतिक व आत्मिक दोनों प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता है।

8. मन विजयः- मन की चंचलता एवं भटकाव के कारण हम मन की दासता में जकड़े हुए हैं, क्यूंकी हमारा मन समुद्र में उठने वाले तुफान की तरह कम्पायमान है, जिस समुद्र रूपी मन में हिंसा, झठू , चोरी, मैथुन तथा परिग्रह की इतनी लहरे तंरगित होती हो राग-द्वेष के बवण्डर उठते हो वहाँ मन विजय नहीं हो सकती तथा चित्त की अस्थिरता से सुखी भी नहीं। हमारे आश्रव के कारण सकं ल्पो- विकल्पों में, विचारों में, कल्पनाओं में भटकाव रहता है। जिससे मन अषान्त ही होता है। इसके अंकुष के लिए व्रतों का अंकुष जरूरी है। अणुव्रतों का पालन कर मन पर नियंत्रण पा सकते हैं। जब मन नियंत्रित होगा तो आत्मिक सुख स्वतः प्राप्त हो सकेगा।

9. धर्म सुख का आधार हैः- रिद्धि, सिद्धि तथा शुद्धि का मार्ग केवल धर्म ही है। तीनों के अभाव में व्यक्ति भटकता है, दुःखी होता है। इन तीनों को पाने का मार्ग धर्म ही है। धर्म बाहरी जीवन का आधार है, जो धन बनकर प्रकट होता है तथा यह आन्तरिक आयाम भी है, जो ध्यान बनकर मन को प्रकाषित करता है। यह भीतर से मन को प्रफुल्लित करता है, बाहर से रक्षा। मानव जीवन को सुखमय बनाने तथा जीवन को उत्कृष्ट बनाने का सर्वोत्तम साधन धर्म ही है। यह तो वह अमृत है, जिसकी आराधना से दुर्लभ मानव भव सार्थक एवं सुखमय एवं सफल बनता है। धर्म आत्मा की वस्तु है, इसमें सत्य, अहिंसा, दया का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। अहिंसा, सयं म और तपरूप धर्म के उत्कृष्ट मंगल है। धर्म को भूलने का परिणाम है, दुःख पीड़ा, तनाव, मानसिक अषान्ति। अतः धर्म की शरण में सच्चा सुख है। धर्म ही तो है, जो हमारी रग-रग में दौड़ता है, हमें जीवन्त रखता है। धर्म अन्तः सुख को फलदायी करता है।

उपरोक्त सभी कारणों द्वारा हम आत्मिय सुख को प्राप्त कर परम आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

# लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के प्रकरणों में ध्यान देने योग्य कुछ जानकारी

श्री पी.के जैन
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
(आरसीबी एंड केआई)

## परिचय:

धोखाधड़ी किसी व्यक्ति या संस्था को धन, संपत्ति या कानूनी अधिकारों से अवैध रूप से वंचित करने के प्रयास में झूठी या भ्रामक जानकारी का जानबूझकर उपयोग है। धोखाधड़ी का गठन करने के लिए, गलत बयान देने वाले पक्ष को पता होना चाहिए या विश्वास करना चाहिए कि यह असत्य या गलत है और दूसरे पक्ष को धोखा देने का इरादा है। धोखाधड़ी को आपराधिक और सिविल अपराध दोनों के रूप में मुकदमा चलाया जा सकता है। धोखाधड़ी के लिए आपराधिक दंड में पीड़ितों को जेल, जुर्माना और बहाली का संयोजन शामिल हो सकता है।

सामान्य कानून न्यायालयों में, धोखाधड़ी एक अपराध है। धोखाधड़ी के उपायों में धोखाधड़ी से प्राप्त समझौते या लेनदेन का प्रतिशोध (यानी, उलटना), नुकसान की भरपाई के लिए मौद्रिक पुरस्कार की वसूली, कदाचार को दंडित करने या रोकने के लिए दंडात्मक क्षति, और संभवतः अन्य शामिल हो सकते हैं।

## भ्रष्टाचार/भ्रष्ट आचरण क्या है:

भ्रष्टाचार बेईमानी या आपराधिक अपराध का एक रूप है या किसी व्यक्ति या संगठन द्वारा किसी व्यक्ति या संगठन द्वारा किया जाता है, जिसे किसी के निजी लाभ के लिए अवैध लाभ या शक्ति का दुरुपयोग करने के लिए अधिकार की स्थिति सौंपी जाती है। भ्रष्ट आचरण का अर्थ होता है, किसी अन्य पक्ष के कार्यों को अनुचित रूप से प्रभावित करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी मूल्यवान चीज़ की पेशकश करना, देना, प्राप्त करना या मांगना।

## धोखाधड़ी और त्रुटि में अन्तर:

निम्नलिखित क्रियाएँ त्रुटि के बराबर हैं जिनको धोखाधड़ी नहीं कहा जा सकता है:-

- डेटा एकत्र करने या संसाधित करने में एक गलती जिससे वित्तीय विवरण तैयार किए जाते हैं।
- तथ्यों की निगरानी या गलत व्याख्या से उत्पन्न होने वाले गलत लेखांकन अनुमान; और
- माप, मान्यता वर्गीकरण, प्रस्तुति या प्रकटीकरण से संबंधित लेखांकन सिद्धांतों के अनुप्रयोग में एक गलती।

धोखाधड़ी निम्न प्रकार से किये जा सकते है:

- रिश्वत:;
- मूल अनुबंधों में परिवर्तन’
- डुप्लिकेट भुगतान;
- कोलुसिव या कार्टेल बोली’
- मूल्य निर्धारण में झूठे चालान प्रस्तुत करना ,
- किसी उच्च अधिकारी के अनुमोदन को टालने के लिए खरीद का विभाजन;
- फैंटम कॉन्ट्रैक्टर;
- अनुरूप विनिर्देश और अधिक मात्रा में आपूर्ति आदेश

**धोखाधड़ी के प्रकरणों में प्रबंधन और लेखा परीक्षा की जिम्मेदारी**:

धोखाधड़ी और त्रुटियों का पता लगाने की मुख्य जिम्मेदारी प्रबंधन के पास है। प्रबंधन को उक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आंतरिक नियंत्रण प्रणाली को मजबूत करना चाहिए। लेखापरीक्षा आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की प्रणाली की समीक्षा करती है और देखी गई कमियों का सुझाव देती है। प्रबंधन से धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की रोकथाम, पता लगाने, प्रतिक्रिया और अनुवर्ती कार्रवाई और रिपोर्टिंग के लिए स्थापित प्रणाली का दस्तावेजीकरण करने की उम्मीद है।

यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि यदि कोई बहुत अधिक भौतिक धोखाधड़ी की गई थी, लेकिन ऑडिट में इसका पता नहीं चला था, तो ऑडिट कर्मियों के आचरण में संदेह उत्पन्न होगा, खासकर अगर सबूत ऐसे थे जो सामान्य विवेक से लेखापरीक्षा के दौरान धोखाधड़ी को पकड़ सकते थे । लेखा परीक्षा कर्मियों को नियोजन स्तर पर धोखाधड़ी की संभावनाओं के बारे में पता होना चाहिए और लेखा परीक्षा कार्य करते समय सतर्क रहना चाहिए।

वित्तीय विवरणों के ऑडिट के दौरान, दो प्रकार के जानबूझकर गलत विवरण लेखा परीक्षक के लिए प्रासंगिक हैं। (i) धोखाधड़ी वित्तीय रिपोर्टिंग (ii) परिसंपत्तियों का दुरूपयोग । एक लेखा परीक्षक उचित आश्वासन प्राप्त करता है कि समग्र रूप से लिए गए वित्तीय विवरण भौतिक गलत बयानी से मुक्त हैं। धोखाधड़ी वाली वित्तीय रिपोर्टिंग में जानबूझकर गलत विवरण शामिल होते हैं जिसमें राशि या प्रकटीकरण की चूक शामिल होती है। इसमें हेरफेर, मिथ्याकरण (जालसाजी सहित), या लेखा रिकॉर्ड में परिवर्तन या सहायक दस्तावेज शामिल हैं जिनसे वित्तीय विवरण तैयार किए जाते हैं। परिसंपत्तियों के दुरुपयोग में एक इकाई की संपत्ति की चोरी शामिल है और इसे कर्मचारियों के साथ-साथ प्रबंधन द्वारा भी किया जा सकता है

**लेखापरीक्षा योजना चरण में धोखाधड़ी जागरूकता जोखिम मूल्यांकन**:

लेखापरीक्षा योजना चरण में, लेखापरीक्षा दल को स्वतंत्र जोखिम मूल्यांकन करना चाहिए और तदनुसार अपनी लेखापरीक्षा योजना को प्राथमिकता देनी चाहिए, लेखापरीक्षा योजनाओं को उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। लेखा परीक्षक इस बात को ध्यान में रख सकता है कि माल और सेवाओं की खरीद में शामिल कुछ संगठनों में धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार का जोखिम अधिक हो सकता है। लेखा परीक्षक को लेखापरीक्षित इकाई की पूरी समझ होनी चाहिए, जिस वातावरण में इकाई संचालित होती है।

**निम्न कुछ सामान्य उच्च जोखिम वाले क्षेत्र (उदाहरण) हैं I**

लेखापरीक्षित इकाई की समझ से लेखा परीक्षक को संभावित उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों की पहचान करने और लेखा परीक्षा प्रक्रियाओं और तकनीकों को उपयुक्त रूप से संशोधित करने में सक्षम होना चाहिए। कुछ सामान्य उच्च जोखिम वाले क्षेत्र (उदाहरण) निम्न प्रकार हैं:

- सेवा/अधिप्राप्ति के अनुबंध
- निविदाएं, बोलीदाताओं का चयन
- भंडार और / संपत्ति प्रबंधन;
- सेवा/अधिप्राप्ति के लिए मंजूरी/मंजूरी;
- राजस्व प्राप्तियां (उदाहरण के लिए, माल का गलत मूल्यांकन, अस्वीकार्य शुल्क वापसी दावे, रिफंड दावों के संबंध में छूट और अधिसूचनाओं का दुरुपयोग, रसीदों के गलत खाते के माध्यम से गबन, आदि)
- नकदी प्रबंधन;
- अनुदान (जैसे स्वायत्त निकायों गैर-सरकारी संगठनों को सहायता अनुदान; उदाहरण के लिए, धोखाधड़ी के जोखिम में सरकारी विभागों द्वारा अनुदान प्रदान करने और प्रशासित करने या प्राप्तकर्ताओं द्वारा खर्च करने में निर्धारित शर्तों का उल्लंघन शामिल है, गैरकानूनी अनुदान प्राप्त करने के लिए वित्तीय रिपोर्टिंग में जानबूझकर गलत बयान);
- वित्तीय विवरण
- कम्प्यूटरीकृत वातावरण;
- सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यों का निजीकरण (उदाहरण के लिए, धोखाधड़ी के जोखिम में खुली प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया को न अपनाना, बोली की शर्तों और मूल्यांकन मानदंडों में हेरफेर आदि शामिल हैं).

**धोखाधड़ी और लेखापरीक्षा साक्ष्य:**

लेखा परीक्षकों को स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि प्राप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य केवल प्रेरक और निर्णायक नहीं हो सकते हैं, फिर भी संदिग्ध धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के मामले में सबूत निर्णायक के करीब होना चाहिए। संदिग्ध धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार के सभी मामलों की रिपोर्ट करते समय, लेखा परीक्षक को धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार के अस्तित्व के बारे में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए, लेकिन संदिग्ध धोखाधड़ी / भ्रष्टाचार या अनुमानित धोखाधड़ी का सुझाव देना चाहिए।

**धोखाधड़ी के प्रकरणों में लेखा परीक्षा का दृष्टिकोण:**

चूंकि धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के मामलों के बारे में पूर्ण साक्ष्य लेखापरीक्षा के लिए उपलब्ध नहीं हो सकते हैं, इसलिए लेखा परीक्षा निष्कर्ष पर पहुंचने में उचित सावधानी बरती जानी चाहिए। जब लेखा परीक्षकों को धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की संभावना पर संदेह होता है, तो उन्हें यह स्थापित करना चाहिए कि क्या यह हुआ है और वित्तीय रिपोर्टिंग पर परिणामी प्रभाव पड़ा है, खासकर क्या लेखा परीक्षा प्रमाण पत्र को योग्यता की आवश्यकता है। जब लेखा परीक्षक धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार पर रिपोर्ट करने का इरादा रखते हैं, तो उन्हें तीसरे पक्ष के साक्ष्य सहित स्रोत दस्तावेजों के साथ सत्यापित करके ऑडिट साक्ष्य की विश्वसनीयता सुनिश्चित करनी चाहिए।

**धोखाधड़ी के प्रकरणों की रिपोर्टिंग:**

कार्यालय भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा जारी धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के मामलों के सम्बन्ध में लेखा परीक्षा की भूमिका पर स्थायी आदेश के अनुसार संदिग्ध/अनुमानित धोखाधड़ी/भ्रष्टाचार के अलग-अलग मामलों की प्रारंभिक रिपोर्टिंग गोपनीय रूप से, पहली बार समूह अधिकारियों के अनुमोदन से संबंधित नियंत्रण प्राधिकारी को संबोधित किया जाना चाहिए। प्रतियां एक साथ उन मामलों में उच्च अधिकारियों को गोपनीय रूप से भेजी जा सकती हैं जिन्हें इतना गंभीर या गंभीर माना जाता है। धोखाधड़ी/अनुमानित धोखाधड़ी की जिन स्थितियों/घटनाओं का सुझाव दिया जा सकता है, उन्हें विस्तृत जांच और प्रतिक्रिया के लिए कार्यपालिका को सिफारिश के साथ निरीक्षण रिपोर्टों में उजागर किया जाना चाहिए।

ऑडिट रिपोर्ट की बॉन्ड कॉपी मुख्यालय को अग्रेषित करते समय, एजी, पीएजी आदि को अग्रेषण पत्र में बांड कॉपी में शामिल संबंधित पैरा के धन मूल्य के साथ संदिग्ध धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार के मामलों की संख्या पर प्रकाश डालना चाहिए। ऐसे सभी मामलों को एजी द्वारा उचित सतर्कता या जांच प्राधिकरण के साथ बांड की प्रति के अनुमोदन के तुरंत बाद लिया जाना चाहिए, भले ही ये मामले उन्हें पहले रिपोर्ट किए गए हों। ऐसे मामलों को सतर्कता या जांच प्राधिकरणों जैसे सीबीआई, केंद्र और राज्य के कुलपति, लोकायुक्त आदि को अतिरिक्त जानकारी के दस्तावेजो के साथ भेजा जाना चाहिए।

# गाँव वाला घर

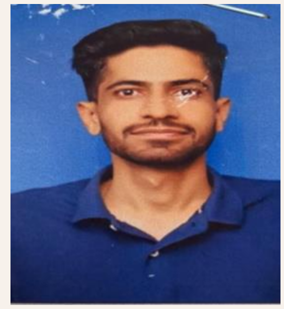

श्री कपिल महला
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
(आरसीबी एंड केआई)

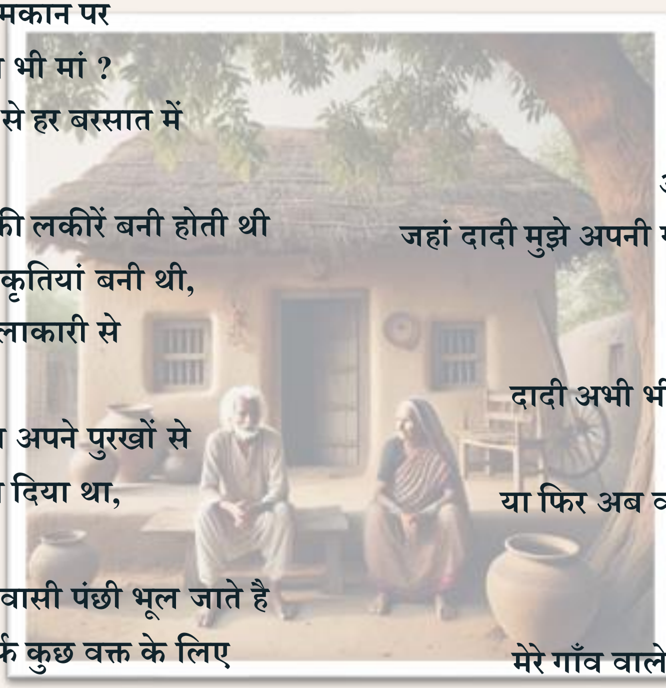

**सुनो माँ !!**
**अब घर लौटना चाहता हूं**
**मेरे गाँव वाले मिट्टी से लिपे मकान पर**
**वह मेरा कमरा तो है ना अभी भी मां ?**
**हाँ वही कमरा, जिसकी छत से हर बरसात में**
**पानी की बुंदे टपकती थी**
**जिसकी दीवारों पर सीलन की लकीरें बनी होती थी**
**जिसकी सांकल पर कुछ आकृतियां बनी थी,**
**गाँव के मिस्त्री काका की कलाकारी से**
**हाँ वही कमरा मां**
**जो मुझे विरासत में मिला था अपने पुरखों से**
**जिसे मैंने शहर आते ही भूला दिया था,**
**उन गांव की यादों से संग**
**ठीक उसी तरह, जिस तरह प्रवासी पंछी भूल जाते है**
**अपने पुराने ठिकानों को सिर्फ कुछ वक्त के लिए**
**और फिर वापिस आ जाते है,**
**दुबारा उन्ही ठिकानों पर बसेरे के लिए,**
**एक निश्चित मौसम के बाद**

**माँ !!**
**मैं भी घर लौटना चाहता हूँ**
**ठीक उन पंछियों की तरह**
**उसी गली, उसी मकान**
**और उसी मिट्टी से सने कमरे में**
**जहां दादी मुझे अपनी गोद में लौरी सुनाया करती थी**
**मां !!**
**दादी के जिक्र से याद आया**
**दादी अभी भी लोप लगाती है उस कमरे के**
**फर्श पर लाल मिट्टी का ??**
**या फिर अब वो भी सीमेंट की हो गयी है ??**
**सुनो माँ !!**
**मैं अब घर लौटना चाहता हूँ**
**मेरे गाँव वाले मिट्टी से लिपे मकान पर ......**

**हिन्दी पखवाड़ा 2023 के दौरान क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जयपुर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नानुसार है :-**

| दिनांक | प्रतियोगिता का नाम | परिणाम |
|---|---|---|
| 14.09.2023<br>**(गुरुवार)** | निबन्ध प्रतियोगिता :-<br>विषय – "सरकारी काम-काज में हिन्दी के सार्थक प्रयोग में आने वाली रुकावटें" | **प्रथम** : श्री राजेश कुमार भुराडिया स.ले.प.अ. (प्रशिक्षणार्थी)<br>**द्वितीय :** श्री पुनीत कुमार शर्मा, स.प्र.अ<br>**तृतीय :** श्री परमोद कुमार जैन, व.प्र.अ. |
| **15.09.2023**<br>**(शुक्रवार)** | वाद-विवाद प्रतियोगिता:-<br>विषय-" स्मार्टफोन और कंप्युटर का बढ़ता प्रयोग - वरदान या अभिशाप | **प्रथम** : श्री लोचन गोयल, स.ले.अ.प.<br>**द्वितीय :** श्री गौरव वशिष्ठ, स.ले.प.अ.<br>**तृतीय** : श्री राजू लाल शर्मा, ले.प. |

**हिन्दी पखवाड़ा 2024 के दोरान क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, जयपुर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का परिमाण निम्नानुसार है:**

| दिनांक | प्रतियोगिता का नाम | परिणाम |
|---|---|---|
| **05.09.2024** | आशु भाषण प्रतियोगिता | **प्रथम:** श्री नितिन व्यास, स.ले.प.अ. (प्रशिक्षणार्थी)<br>**द्वितीय:** श्री कमलेश कुमार, स. प्र. अ. (OIOS)<br>**तृतीय**: श्री हिमांशु कुमार पालीवाल, स.ले.प.अ. (प्रशिक्षणार्थी) |
| **11.09.2024** | निबन्ध प्रतियोगिता:-<br>विषय- "भ्रष्टाचार की समस्या के कारण और निवारण" | **प्रथम:** श्री पुनीत कुमार शर्मा, स. प्र. अ.<br>**द्वितीय:** सुश्री प्रियंका चुण्डावत, ले.प.अ. (प्रशिक्षणार्थी)<br>**तृतीय**: श्री राजू लाल शर्मा, ले.प. |
| **12.09.2024** | वाद-विवाद प्रतियोगिता:- विषय- "कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफ़िशियल इन्टेलिजन्सी)-वरदान य अभिशाप | **प्रथम:** श्री दिनेश कुमार लोहार, स. प्र. अ. (e-HRMS)<br>**द्वितीय:** श्री पुनीत कुमार शर्मा, स. प्र. अ.<br>**तृतीय**: श्री दीपक सैनी, स. प्र. अ. (OIOS) |
| **13.09.2024** | श्रुत-लेखन प्रतियोगिता | **प्रथम:** श्री दीपक सैनी, स. प्र. अ. (OIOS)<br>**द्वितीय:** श्री जसमेन्द्र सिंह, स.ले.अ. (प्रशिक्षणार्थी)<br>**तृतीय**: श्री अशोक शेखर, स.ले.अ. (प्रशिक्षणार्थी) |

# 10 वाँ अन्तराष्ट्रिय योग दिवस समारोह

# हिन्दी पखवाड़ा-2024 की कुछ झलकियाँ

विभागीय हिन्दी पत्रिका
कुरजाँ
अनुक्रमणिका

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर
REGIONAL TRAINING INSTITUTE, JAIPUR

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर
REGIONAL TRAINING INSTITUTE, JAIPUR